International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

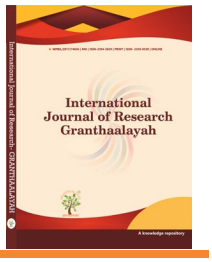

Original Article

ANCIENT INDIAN ART AND ARCHITECTURE: A STUDY IN CULTURAL AND RELIGIOUS PERSPECTIVES

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला: सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

Dr. Usha Yadav [1*]
[1] Assistant Professor, Sociology, Prime Minister's College of Excellence, Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College, Indore, India

ABSTRACT

English: Ancient Indian art and architecture constitute one of the world's richest and most developed artistic traditions. Its development continued from the Indus Valley Civilization through the Vedic, Mauryan, Gupta, and South Indian Choladripallava periods. Indian art was not only an expression of aesthetics but also a powerful medium of religious beliefs, philosophical thought, social structure, and political power. Through temples, stupas, caves, sculptures, and paintings, Indian society embodied its spiritual and cultural values. This paper analyzes the historical development, styles, techniques, and cultural significance of ancient Indian art and architecture.

Hindi: प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला विश्व की सर्वाधिक समृद्ध और विकसित कलात्मक परंपराओं में से एक रही है। इसका विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरंभ होकर वैदिक, मौर्य, गुप्त तथा दक्षिण भारतीय चोलदृपल्लव काल तक निरंतर होता रहा। भारतीय कला केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि वह धार्मिक विश्वासों, दार्शनिक चिंतन, सामाजिक संरचना तथा राजनीतिक सत्ता का सशक्त माध्यम भी थी। मंदिर, स्तूप, गुफाएँ, मूर्तियाँ और चित्रकला के माध्यम से भारतीय समाज ने अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को मूर्त रूप प्रदान किया। यह शोध-पत्र प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास, शैलियों, तकनीकों तथा सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Keywords: Ancient Indian Art, Architecture, Sculpture, Temple Architecture, Cultural Heritage, Religious Symbolism, प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला, मूर्तिकला, मंदिर स्थापत्य, सांस्कृतिक धरोहर, धार्मिक प्रतीकवाद

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला भारतीय सभ्यता की आत्मा का प्रतीक रही है। यह कला न केवल सौंदर्यात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी, बल्कि सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्था और दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम भी बनी। भारत की भौगोलिक विविधता ने इसकी कला शैलियों को बहुरंगी स्वरूप

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Usha Yadav (v.shruti@rediffmail.com)
Received: 25 December 2025; **Accepted:** 27 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6776
Page Number: 228-230
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रदान किया। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर गुप्त एवं दक्षिण भारतीय काल तक कला का स्वरूप निरंतर विकसित होता रहा, जिसने भारतीय संस्कृति को वैश्विक पहचान प्रदान की।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला के विकास का विश्लेषण करना।
- धार्मिक एवं दार्शनिक प्रभावों को समझना।
- विभिन्न स्थापत्य शैलियों का अध्ययन करना।
- सांस्कृतिक धरोहर के रूप में कला के महत्व को स्पष्ट करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया, जिनमें ऐतिहासिक ग्रंथ, पुरातात्त्विक रिपोर्ट, शोध पत्रिकाएँ, विद्वानों के प्रकाशित लेख शामिल हैं। उपलब्ध स्थापत्य संरचनाओं, मंदिरों, स्तूपों एवं गुफाओं का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

प्राचीन भारतीय कला का कालानुक्रमिक विकास

1) सिंधु घाटी सभ्यता (2600-1900 ई.पू.)

इस काल में नगर नियोजन, पक्की ईंटों के भवन, जल निकासी प्रणाली तथा सार्वजनिक स्नानागार जैसी उन्नत वास्तुकला विकसित हुई। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कांस्य नर्तकी एवं मातृदेवी की मूर्तियाँ तत्कालीन कलात्मक चेतना को दर्शाती हैं।

2) वैदिक काल

इस काल में यज्ञ मंडप, आश्रम एवं धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ी संरचनाएँ प्रमुख रहीं। कला का स्वरूप प्रतीकात्मक एवं आध्यात्मिक था।

3) मौर्य काल

सम्राट अशोक के स्तंभ, स्तूप तथा गुफाएँ मौर्य कला की पहचान हैं। सारनाथ स्तंभ एवं सांची स्तूप इस काल की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हैं।

4) गुप्त काल, स्वर्ण युग

गुप्त काल को भारतीय कला का स्वर्ण युग कहा जाता है। मंदिर निर्माण, मूर्तिकला एवं चित्रकला अपने उत्कर्ष पर पहुँची। देवगढ़ का दशावतार मंदिर तथा अजंता गुफाओं की चित्रकला इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

5) दक्षिण भारतीय कला (चोल, पल्लव काल)

द्रविड़ शैली में निर्मित भव्य मंदिर, विशेषकर बृहदीश्वर मंदिर (तंजावुर) और कांस्य नटराज प्रतिमा, इस काल की महान उपलब्धियाँ हैं।

प्रमुख कला रूप

1) वास्तुकला

मंदिर, स्तूप, विहार, चैत्य नागर, द्रविड़ एवं वेसर शैलियाँ

2) मूर्तिकला

गांधार, मथुरा एवं अमरावती शैलियाँ, पत्थर, कांस्य एवं ताम्र मूर्तियाँ

3) चित्रकला

अजंता, एलोरा, बाघ गुफाएँ, हस्तलिखित पांडुलिपियाँ

4) सजावटी कला

वस्त्र कला, मृद्भांड, आभूषण निर्माण

कला एवं वास्तुकला का सांस्कृतिक महत्व

प्राचीन भारतीय कला धार्मिक प्रतीकवाद से गहराई से जुड़ी हुई थी। मंदिर और मठ केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि शिक्षा, संगीत, नृत्य एवं सामाजिक गतिविधियों के केंद्र भी थे। कला के माध्यम से धर्म, दर्शन और सामाजिक मूल्य जनसामान्य तक पहुँचाए जाते थे।

राजाश्रय और संरक्षकता

मौर्य, गुप्त, चोल, पल्लव एवं विजयनगर शासकों ने कला को संरक्षण प्रदान किया। राजाओं के संरक्षण से कलाकारों एवं शिल्पकारों को सामाजिक सम्मान प्राप्त हुआ और स्थापत्य कला ने अभूतपूर्व ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।

पतन एवं रूपांतरण

विदेशी आक्रमणों, राजनीतिक अस्थिरता तथा सामाजिक परिवर्तनों के कारण कई पारंपरिक तकनीकें लुप्त हुईं। यद्यपि मध्यकाल में मुगल स्थापत्य के माध्यम से नई मिश्रित शैलियों का उदय हुआ।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक आत्मा का दर्पण है। यह केवल स्थापत्य संरचनाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि धार्मिक, दार्शनिक एवं सामाजिक चेतना की वाहक बनी। आज यह धरोहर हमें हमारे गौरवशाली अतीत से जोड़ती है तथा सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती है। इसके संरक्षण और अध्ययन की आवश्यकता वर्तमान समय में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

REFERENCES

Chatterjee, S. (2019). Temple Architecture of South India (दक्षिण भारत का मंदिर स्थापत्य). Orient Longman.

Devahuti, D. (2017). Gupta Period Art and Architecture (गुप्तकालीन कला और स्थापत्य). Motilal Banarsidass.

Kosambi, D. D. (2012). Indian History and Culture (भारतीय इतिहास और संस्कृति). Rajkamal Prakashan.

Kumar, N. (2016). Ancient Indian Art and Architecture (प्राचीन भारतीय कला एवं स्थापत्य). National Book Trust.

Majumdar, R. C. (2014). History of Ancient India (प्राचीन भारत का इतिहास). Bharatiya Vidya Bhavan.

Mishra, R. (2018). History of Indian Architecture (भारतीय स्थापत्य कला का इतिहास). Chaukhamba Vidyabhavan.

Sharma, P. (2020). Indian Art and Culture (भारतीय कला और संस्कृति). Madhya Pradesh Hindi Granth Academy.

Sharma, R. S. (2015). Social History of Ancient India (प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास). Orient BlackSwan.

Singh, R. P. (2016). Indian Art Tradition: A study (भारतीय कला परंपरा: एक अध्ययन). Rawat Publications.

Verma, R. (2018). Cultural Heritage of Indian Art and Architecture (भारतीय कला एवं स्थापत्य की सांस्कृतिक विरासत). Rajkamal Prakashan.